उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक: 374/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 28–06–2023

दिनांक	:	28 जून, 2023
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की चतुर्थ बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2023–24 की चतुर्थ बैठक श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 28 जून, 2023 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ, आ. न.दे. कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक व धान प्रजनक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक, पादप रोग वैज्ञानिक; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ; केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ, रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर, लखनऊ, कृषि विभाग, पशुपालन विभाग; गन्ना विभाग; रेशम विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 28 जून से 04 जुलाई, 2023 तक) उत्तर प्रदेश के सभी अंचलों में 25 जून, 2023 से मानसून पूर्ण रूप से सक्रिय है। सप्ताह के पहले दिन (28 जून, 2023) प्रदेश के पश्चिमी, पूर्वी, मध्य एवं बुंदेलखण्ड के सभी जलवायुवीय क्षेत्रों के कई जनपदों में कुछ स्थानों पर गरज चमक के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है। इसके उपरांत सप्ताह के अन्य दिनों में पश्चिमी, पूर्वी, मध्य एवं बुंदेलखण्ड के अंचलों में आसमान में मुख्यतः मध्यम से घने बादल छाये रहेगें तथा मानसूनी वर्षा के क्षेत्रफल एवं तीव्रता में 29 जून से वृद्धि होने तथा पूरे सप्ताह प्रदेश में अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है। प्रदेश के सभी अंचलों में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान सामान्य या सामान्य से नीचे रहने की संभावना है। वहीं पूर्वी दक्षिणी हवायें सामान्य गति 12 से 15 कि.मी. प्रति घंटा की दर से चलने की संभावना है। सप्ताह के पहले 02 दिनों (28 से 29 जून, 2023) में प्रदेश के सभी अंचलों में सापेक्षिक आर्द्रता अधिकतम 65 से 85 प्रतिशत के बीच एवं न्यूनतम 35 से 55 प्रतिशत के बीच रहने की संभावना है। वहीं सप्ताह के अंतिम 4 दिनों में सापेक्षिक आर्द्रता 80 से 90 व न्यूनतम 55 से 75 प्रतिशत के मध्य बने रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. से प्राप्त खरीफ फसलों के आच्छादन आंकड़ों के अनुसार दिनांक 21 जून, 2023 तक कुल लक्ष्य 96.20 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 4.41 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है। धान की नर्सरी के लक्ष्य 3.83 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 3.13 लाख हेक्टेयर में नर्सरी डाली जा चुकी है, जो लक्ष्य का 81.7 प्रतिशत है। सुगंधित धान के लक्ष्य 8.62 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.55 लाख हेक्टेयर की पूर्ति हो चुकी है। जो लक्ष्य का 6.4 प्रतिशत है। संकर धान के लक्ष्य 15.88 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.11 लाख हेक्टेयर में की जा चुकी है। जो लक्ष्य का 0.7 प्रतिशत है। मक्का की बुआई के लक्ष्य 8 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 1.69 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है जो लक्ष्य का 21 प्रतिशत है। ज्वार के लक्ष्य 2.18 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.03 लाख हेक्टेयर की पूर्ति की जा चुकी है। बाजरा के लक्ष्य 10.1 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.28 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है। उर्द के लक्ष्य 7.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.14 लाख हेक्टेयर में की जा चुकी है जो लक्ष्य का लगभग 2 प्रतिशत है। मूंग के लक्ष्य 0.40 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.01 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 3 प्रतिशत है। अरहर के लक्ष्य 3.35 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.36 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 10 प्रतिशत है। मूंगफली के लक्ष्य 1.24 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.07 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 5.7 प्रतिशत है। तिल के लक्ष्य 4.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.04 लाख हेक्टेयर में बुवाई हुई है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- यदि बीज शोधित न हो तो 4–6 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से ट्राइकोडर्मा से उपचारित करें।
- मानसून की असामान्य गति होने के कारण यदि नर्सरी की बुवाई अभी तक नहीं हो सकी है तो कम अवधि वाली संस्तुत किस्मों यथा बरानी द्वीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र–लालमती, मालवीय धान–2, मालवीय धान–917, शियाट्स धान–5, सी.ओ.–51, आई.आर.–50, रत्ना तथा ऊसर हेतु संस्तुत प्रजाति सी.एस.आर.–60 की नर्सरी डालें।
- जिन कृषकों ने हरी खाद के लिए सनई व ढैंचे की बुआई की है वह 40 से 45 दिन की पौध की पलटाई कर दें।
- श्री पद्धति से 1 हे. रोपाई हेतु मात्र 1000 वर्ग फुट क्षेत्रफल की पौध पर्याप्त है तथा नर्सरी की क्यारियाँ 4–5 इंच ऊँची हों। श्री पद्धति के लिये 6 किग्रा. प्रति हे. की दर से बीज की नर्सरी में बुआई करें। श्री पद्धति की नर्सरी में जहाँ तक संभव हो देशी खाद का ही प्रयोग करें तथा 8–12 दिन वाली पौध की रोपाई करें।
- रोपाई वाले खेत में 1 फीट ऊँची मेढ़ बनाएं ताकि वर्षा जल संचित कर लाभ लिया जा सके।
- धान की रोपाई हेतु खेत की तैयारी के समय 25 कि.ग्रा./हे. दर से जिंक सल्फेट डालें।
- मृदा जनित रोगों के नियंत्रण 10 कि.ग्रा. गोबर की खाद में 2 कि.ग्रा. ट्राइकोडर्मा पाऊडर मिलाकर 2–3 दिन रखने के उपरांत खेत में डालें।
- आगामी सप्ताह में वज्रपात की संभावना के दृष्टिगत कृषक सावधानी बरतें।

धान की खेती

- धान की रोपाई हेतु मौसम अनुकूल है अतः कृषक युद्ध स्तर पर रोपाई करें।
- धान की 20–25 दिन वाली पौध की रोपाई प्रत्येक वर्गमीटर में 50–55 हिल तथा 2–3 पौधा प्रति हिल 3–4 सेमी. की गहराई तक करें।
- नर्सरी में खैरा रोग का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट को 2.5 कि.ग्रा. यूरिया के साथ 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें, उसके उपरांत यदि लक्षण दिखाई दे तो 10 से 15 दिन बाद पुनः छिड़काव करें।
- जिन कृषकों ने अभी तक नर्सरी नहीं डाली है वह धान की सीधी बुवाई करें। ड्रम सीडर द्वारा धान की सीधी बुवाई हेतु किस्मों नरेन्द्र–97, मालवीय धान–2, नरेन्द्र–359 तथा सरजू–52 की बुवाई 50 से 55 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर की दर से करें।
- नर्सरी में पर्ण झुलसा का प्रकोप होने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 75 ग्रा. या एग्रीमाइसिन–100 (100 ग्रा.) के साथ कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- रोपाई के उपरान्त संकरी व चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु ब्यूटाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 3–4 लीटर अथवा प्रोटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 1.60 लीटर मात्रा प्रति हे. की दर से लगभग 500 ली. पानी में घोलकर फ्लैटफैन नॉजिल से 2 इंच भरे पानी में रोपाई के 2–3 दिन के अन्दर छिड़काव करें।
- धान की ''डबल रोपाई या सण्डा प्लाटिंग'' हेतु तीन सप्ताह की अवधि के पौधे की प्रथम रोपाई 20 X 10 से.मी. की दूरी पर करना सुनिश्चित करें।

मक्का की खेती

- मक्का की मध्यम अवधि की संकर किस्मों यथा–दकन–107, मालवीय संकर मक्का–2, प्रो–303 (3461), के.एच. –9451, के.एच.–510, एम.एम.एच.–69, बायो–9637, बायो–9682 एवं संकुल प्रजातियों नवजोत, पूसा कम्पोजिट–2, श्वेता सफेद, नवीन की बुवाई करें।
- पूर्व से बोये गये मक्का में जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

श्री अन्न की खेती

- **ज्वार** की संकुल प्रजातियों यथा एस.पी.बी.–1388 (बुन्देला), सी.एस.बी.–15, वर्षा विजेता व सी.एस.बी.–13 तथा संकर प्रजातियों सी.एस.एच.–23, 13, 18, 14, 9, 16 की बुवाई करें।
- **सावां** की किस्मों यथा आई.पी.एम.–151, आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–100 आई.पी.एम.–148 आई.पी.एम.–97 की बुवाई करें।

- कोदों की किस्मों यथा जी.पी.वी.के.–3, ए.पी.के.–1, जे.के.–2, जे.के.–62, वम्बन–1 व जे.के.–6 की बुवाई करें।

अरहर की खेती

- अरहर की अधिक उपज हेतु उन्नत देर से पकने वाली किस्मों यथा मालवीय चमत्कार, नरेन्द्र अरहर–2, बहार, अमर, नरेन्द्र अरहर–1, आजाद, पूसा–9, मालवीय विकास (एम.ए.6), टा–64, टा–28, चन्द्रा, उत्कर्ष, एम–13, अम्बर, चित्रा, कौशल, टी.जी.–37ए व प्रकाश की बुवाई करें।

सोयाबीन की खेती

- सोयाबीन की उन्नत एवं अधिक उपज देने वाली किस्मों यथा पी.के.–472, पूसा–20, पी.के.–416, पी.एस. –1024, पी.एस.–1042, जे.एस.–335 तथा पी.के.–262 की बुवाई करें।

तिल की खेती

- तिल की उन्नतशील किस्मों यथा गुजरात तिल–6, आर.टी.–346, आर.टी.–351, तरूण, प्रगति, शेखर टाइप–78, टाइप–13, टाइप–4 व टाइप–12 की बुवाई करें।
- फाइलोडी रोग से बचाव हेतु बुवाई के समय कूँड़ में फोरेट 10 जी. 15 किग्रा. प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।

मूँगफली की खेती

- मूँगफली की उन्नतिशील किस्मों चन्द्रा उपरहार, उत्कर्ष, एम–13, अम्बर, चित्रा (एम.ए.10), कौशल (जी.201), टी. जी. 37ए, प्रकाश की बुआई जुलाई प्रथम सप्ताह तक पूर्ण कर लें। इसके उपरान्त बुआई करने पर फसल में बडनिकोसिस बीमारी लगने की संभावना ज्यादा होती है।

गन्ना की खेती

- चोटी बेधक के प्रभावी नियंत्रण के लिये फ्यूराडान 1 किग्रा. (सक्रिय तत्व) या क्लोरेंटेन्लीप्रोल 375 एम.एल. प्रति हे. की दर से खेत में पर्याप्त नमी की अवस्था में प्रयोग करें।
- शरदकालीन गन्ने में हल्की मिट्टी चढ़ायें जिससे बढ़वार के साथ गन्ना ना गिरे तथा देर से निकलने वाले कल्ले कम से कम निकलें क्योंकि जुलाई के उपरान्त निकलने वाले कल्ले से उस वर्ष गन्ना नहीं बन पाता है।
- जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।
- चूसक कीट का प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. का 200 एम.एल./हे. छिड़काव करें।
- लाल सड़न बीमारी के लक्षण दिखने पर प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकाल कर 10–20 ग्राम ब्लीचिंग पाऊडर अथवा 0.2 प्रतिशत थायोफेनेट मिथाइल की जड़ों के पास ड्रेसिंग करें।
- शरदकालीन गन्ने में पोक्काबोइंग रोग दिखने पर 0.1 प्रतिशत कार्बेन्डाजिम अथवा 0.2 प्रतिशत कापर आक्सीक्लोराइड का छिड़काव करें।
- शरदकालीन गन्ने में पर्याप्त ब्यात होने पर मिट्टी चढ़ा दें।
- बसंतकालीन गन्ने में यूरिया की दूसरी टापड्रेसिंग अवश्य करें।

सब्जियों की खेती

- खरीफ सब्जियों यथा बैंगन, मिर्च एवं फूलगोभी की अगेती किस्मों की नर्सरी में बुआई करें। नर्सरी को कीटों से बचाने हेतु लो–टनेल पॉलीहाऊस का प्रयोग करें तथा ऊंची बेड पर ही नर्सरी डालें। नर्सरी में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
- भिण्डी व लोबिया की बुआई करें।
- हल्दी एवं अदरक की बुवाई जून में समाप्त करें। नये बागों में भी इनकी बुआई की जा सकती है।

- वर्षाकालीन सब्जियों यथा लौकी, तोरई, काशीफल व टिण्डा की बुआई करें।

बागवानी

- आम के बागों में फल मक्खी की संख्या जानने एवं उसके नियंत्रण हेतु कार्बरिल 0.2 प्रतिशत+प्रोटीन हाइड्रोलाइसेट या सीरा 0.1 प्रतिशत अथवा मिथाइल यूजीनाल 0.1 प्रतिशत+मैलाथियान 0.1 प्रतिशत के घोल को डिब्बों में डालकर पेड़ों पर ट्रैप लगायें।
- पौध प्रवर्धन हेतु आम में ग्राफ्टिंग का कार्य करें।

पशुपालन

- लम्पी स्किन रोग (एलएसडी) एक विषाणु जनित रोग है, जिसकी रोकथाम हेतु पशुपालन विभाग द्वारा टीकाकरण प्रोग्राम चलाया जा रहा है। सभी कृषक/पशु पालक अपने निकटतम पशु चिकित्सालय से सम्पर्क कर इसकी रोकथाम संबंधी उपाय एवं टीकाकरण की जानकारी ले सकते हैं।
- बड़े पशुओं में गला घोटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन व लंगड़ी रोग की रोकथाम हेतु बी.क्यू. वैक्सीन से टीककरण करवायें। बकरियों में ई.टी. रोग की रोकथाम हेतु टीकाकरण बरसात से पहले करवाना सुनिश्चित करें। यह सुविधा सभी पशु चिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- भरपेट केवल रसीला चारा नहीं देना चाहिये क्योंकि हरा चारा लगातार देने से अफरा की समस्या हो सकती है।
- पशुओं को खुले में न बांधे क्योंकि आकाशीय बिजली के खतरे से पशुओं को शारीरिक नुकसान हो सकता है।
- पशुओं को ऊँचे स्थान पर बांधें।

मत्स्य पालन

- तालाबों का निर्माण/सुधार कार्य शीघ्र पूर्ण कर लें।
- जिन तालाबों में जलकुम्भी है और वह सूखे हुए है उनकी जुताई करा दें ताकि जलकुम्भी मिट्टी में दब जाये और सड़ जाये।
- हैचरी स्वामी भारतीय मेजर कार्प मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन का कार्य प्रारम्भ कर दें एवं नर्सरियों की तैयारी करा लें।
- तालाबों में बुझा चूना 250 किग्रा./हे. एवं गोबर की खाद 1 टन/हे. डलवा दें। गोबर की खाद डालते समय यह विशेष ध्यान दें कि बादल न हो।
- निगम की हैचरियों पर मत्स्य बीज उपलब्ध है। अतः सभी मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज संचय करने के लिए तैयारी पूरी कर ले और मत्स्य बीज का मॉग पत्र जनपद स्तर पर मत्स्य विभाग को कार्यालय में जमा कर दें।
- जिन तालाबों में मछली उपलब्ध है उनमें पहली वर्षा का पानी आने से मछलियों की मृत्यु की संभावना रहती है अतः ऐसे मत्स्य पालक जिनके तालाबों में आबादी का गन्दा पानी आता है वह 250 किग्रा./हे. की दर से बुझा चूना का छिड़काव कर दें और तालाब में घुलित ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने के लिए आक्सीफ्लों आदि मार्केट में उपलब्ध है पहले से क्रय कर अपने पास रख लें ताकि समय से इसका उपयोग किया जा सके।

रेशम पालन

- प्रदेश के लगभग सभी जनपदों में वर्षा प्रारंभ हो चुकी है, कृषकों द्वारा रोपित शहतूत एवं अर्जुन वृक्षारोपण में घास, खरपतवार की सफाई कर गुड़ाई का कार्य कर लें तथा एरी रेशम कीटपालन हेतु अरण्डी बीज की बुवाई का कार्य प्रारंभ कर देना चाहिये।
- गुड़ाई कार्य के बाद कृषक अर्जुन वृक्षों में प्रति हेक्टेयर में 100:50:50 के अनुपात में एन.पी.के. का प्रयोग किया जाना चाहिये तथा शहतूत वृक्षारोपण जो दो प्रकार से किया जाता है। ट्री टाइप वृक्षारोपण में 45:20:20 के अनुपात में एवं बुश टाइप वृक्षारोपण में 30:30:30 एन.पी.के. का प्रयोग किया जाय।
- टसर रेशम कीटपालन 15 जुलाई से प्रारंभ होने जा रहा है इस हेतु साफ–सफाई का अधिक ध्यान दिया जाय तथा कीट के प्रथम मोल्ट के बाद जीवनसुधा की औषधी का प्रयोग करना चाहिये।
- वृक्षारोपण में गैप फिलिंग का कार्य कर लें।

वानिकी

- खुले क्षेत्रों में रखे पौध को वृक्षारोपण क्षेत्र में ले जाने अथवा बेचने की कार्यवाही करें।
- गड्ढा भरान यथाशीघ्र पूर्ण कर लें। वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य करें।

- पौधों के रोपण अथवा बिक्री हेतु ले जाने से पूर्व तक खुले क्षेत्र में रखें तथा 15 दिन पौधों को जमीन पर रखने के उपरांत ही रोपण करें।
- पौधों को रोपण से पहले सावधानीपूर्वक पालीथीन से निकालें तथा पिण्डी को टूटने न दें उसके उपरांत ही रोपण करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 05 जुलाई, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

29.06.23

(पीयूष कुमार शर्मा)
सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान,उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष को अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन, योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, इलाहाबाद कृषि, प्रौद्योगिक एवं विज्ञान वि.वि., नैनी, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
16. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
17. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
18. केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
19. राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
20. केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
21. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
22. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
23. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
24. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
25. मुख्य वन संरक्षक, प्रचार–प्रसार, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
26. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
27. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
28. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
29. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
30. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
31. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
32. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।

33. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
34. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
35. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
36. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
37. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
38. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
39. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
40. इफ्को किसान संचार लि., इफ्को भवन, 8, गोखले मार्ग, लखनऊ–226001 को इस आशय से प्रेषित कि मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह की संस्तुतियों को वॉयस एस.एम.एस. के माध्यम से कृषकों को प्रेषित करेंगे।
41. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
42. निजी सचिव महानिदेशक को महानिदेशक, उपकार के सूचनार्थ प्रेषित।

28-06-23

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की चतुर्थ बैठक दिनांक 28 जून, 2023 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ
2. श्री राजेन्द्र कुमार सिंह, अपर कृषि निदेशक (प्रसार), कृषि भवन, लखनऊ।
3. डा. अतुल कुमार सिंह, वैज्ञानिक–सी एवं प्रमुख/प्रभारी, राज्य कृषि मौसम सेवा, आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र, लखनऊ।
4. श्री वी.के. शुक्ला, अपर गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
5. डा. एस. सी. शुक्ला, संयुक्त निदेशक, पशुपालन, उत्तर प्रदेश।
6. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
7. डा. अतुल कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ
8. श्री संतोष कुमार, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ
9. डा. सीताराम मिश्रा, विभागाध्यक्ष, कृषि मौसम विज्ञान विभाग, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
10. डा. समीर कुमार विश्वास, विभागाध्यक्ष, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
11. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा।
12. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
13. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
14. श्री बृजेश चन्द्रा, संयुक्त कृषि निदेशक दलहन, कृषि भवन, लखनऊ।
15. श्री नरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक, रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर, लखनऊ।
16. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
17. श्री नीरेन्द्र कुमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।
18. श्री के.पी. सिंह, उपनिदेशक, सांख्यिकी, कृषि निदेशालय, उत्तर प्रदेश।
19. श्री एस.आर.यादव, सहायक निदेशक, मत्स्य निदेशालय उत्तर प्रदेश।
20. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना कालेज ऑफ फारेस्ट्री शुआट्स, प्रयागराज।
21. श्री अनिल सागर, उपनिदेशक (कृ.र.), मुख्यालय, कृषि भवन, लखनऊ।